हर कर्म विधिपूर्वक करने से सिद्धि की प्राप्ति

अपने को विधि द्वारा सिद्धि प्राप्त समझते हो? क्योंकि जो भी पुरुषार्थ करते हैं पुरुषार्थ का लक्ष्य ही है सिद्धि को पाना। जैसे दुनिया वालों के पास आजकल रिद्धि-सिद्धि बहुत है। उस तरफ है रिद्धि-सिद्धि और यहाँ है विधि से सिद्धि। यथार्थ है विधि और सिद्धि, इनको ही दूसरे रूप में लेने कारण रिद्धि-सिद्धि में चले गये हैं। तो अपने को सिद्धि स्वरूप समझते हो? जो भी संकल्प करते हो अगर यथार्थ विधिपूर्वक है तो उनकी रिजल्ट क्या निकलेगी? सिद्धि। तो हर संकल्प वा कर्म अगर विधिपूर्वक है तो सिद्धि जरूर होती है। अगर सिद्धि नहीं है तो विधिपूर्वक भी नहीं है। इसलिये भक्ति में भी जो कार्य करते हैं वा कराते हैं, वैल्यू उसकी विधि पर होती है। विधिपूर्वक होने कारण उस सिद्धि का अनुभव करते हैं। सभी शुरू तो यहाँ हुआ है ना। इसलिये पूछ रहे हैं सिद्धि स्वरूप अपने को समझते हो वा अभी बनना है? समय के प्रमाण दोनों ही फील्ड में रिजल्ट अब तक 95 परसेन्ट जरूर होनी चाहिए क्योंकि जैसे समय की रफ्तार को देख रहे हो और चैलेन्ज भी करते हो तो जो चैलेन्ज की है वह सम्पन्न तब होगी जब आप लोगों की स्थिति सम्पन्न होगी। यह जो चैलेन्ज करते हो वह परिवर्तन किसके आधार पर होगा? उसका फाउन्डेशन कौन है? आप लोग ही फाउन्डेशन हो ना। अगर फाउन्डेशन तैयार हो जाये तब फिर उसके बाद नम्बरवार राजधानी भी तैयार हो। तो जिन्हों को राज्य करने का अधिकारी बनना है वह अपना अधिकार नहीं लेंगे तो दूसरों को फिर नम्बरवार अधिकार कैसे प्राप्त होगा? जो विश्व परिवर्तन का कार्य होना है, वह, जब तक आप लोगों की स्थिति विधि द्वारा सिद्धि को प्राप्त न हुई होगी, तो इस विश्व-कल्याण के कर्तव्य में भी कैसे सिद्ध होंगे। पहले स्वयं की सिद्धि होगी। इतना बड़ा कर्तव्य इतने थोड़े समय में सम्पन्न करना है तो कितनी तेज स्पीड होनी चाहिए? इसके लिये कोई प्लैन बनाते हो? स्पीड को कैसे पूरा करेंगे? सिद्धि स्वरूप बने अर्थात् संकल्प किया और सिद्धि प्राप्त हो। यह है 100 परसेन्ट सिद्धि स्वरूप की निशानी। कर्म किया और सिद्धि प्राप्त। जब साधारण नॉलेज के आधार पर रिधि-सिद्धि को प्राप्त कर सकते हैं तो यह श्रेष्ठ नॉलेज के आधार पर विधि से सिद्धि को नहीं प्राप्त कर सकते? यह चेकिंग चाहिए - कौनसी विधि में कमी रह जाती है जो फिर सिद्धि भी सम्पूर्ण नहीं होती? विधि को चेक करने से सिद्धि आटोमेटिकली ठीक हो जायेगी। इसमें भी सिद्धि ना प्राप्त होने का मुख्य कारण यह है जो एक ही समय तीनों रूप से सर्विस नहीं करते। तीनों रूपों और तीनों रीति से एक समय करना है। नॉलेजफुल, पावरफुल और लॅवफुल। लॅव और ला दोनों साथ-साथ आ जाते हैं। इन तीनों रूप से तो सर्विस करनी ही है लेकिन तीनों रीति से भी करनी है अर्थात् मन्सा, वाचा, कर्मणा तीनों रीति से और एक ही समय तीनों रूप से करनी है। जब वाणी द्वारा सर्विस करते हो तो मन्सा भी पावरफुल हो। पावरफुल स्टेज से उनकी मन्सा को भी चेंज कर देंगे और वाणी द्वारा उनको नॉलेजफुल बना देंगे और फिर कर्मणा सर्विस अर्थात् जो उनके सम्पर्क में आते हैं वह सम्पर्क ऐसा लवफुल हो जो आटोमेटिकली वह महसूस करे कि मैं कोई अपनी गॉडली फैमिली में पहुंच गया हूँ। वह चलन ही ऐसी हो जिससे वह फील करे कि यह मेरी असली फैमिली है। अगर इन तीनों रीति से उनकी मन्सा को भी कन्ट्रोल कर लो और वाणी से नॉलेज दे लाइट-माइट का वरदान दो और कर्मणा अर्थात् सम्पर्क द्वारा, अपने स्थूल एक्टिविटी द्वारा गॉडली फैमिली का अनुभव कराओ तो इस विधिपूर्वक सर्विस करो तो सिद्धि नहीं होगी? एक ही समय तीनों रीति और तीन रूप से सर्विस नहीं करते हो। जब वाचा में आते हो तो मन्सा जो पावरफुल होनी चाहिए वह कम हो जाती है। जब रमणीक एक्टिविटी से किसको सम्पर्क में लाते तो भी मन्सा जो पावरफुल होनी चाहिए वह नहीं रहती है। तो एक ही समय तीनों अगर इकट्ठी हों तो सिद्धि जरूर मिलेगी। इस रीति से सर्विस करने का अभ्यास और अटेन्शन होना चाहिए। सम्बन्ध में नहीं आते, डीप सम्पर्क में नहीं, ऊपर-ऊपर के सम्पर्क में आते हैं। वह ऊपर का सम्पर्क अल्पकाल का रहता है। भल लॅव में लाते भी हो लेकिन लॅवफुल के साथ पावरफुल हो, उन आत्माओं में भी पावर भरे जिससे वह समस्याओं का, वायुमण्डल का, वायब्रेशन का सामना कर सदाकाल सम्बन्ध में रहें, वह नहीं होता या तो नॉलेज पर अट्रैक्टिव होते हैं वा लॅव पर होते हैं। ज्यादा लॅव पर होते हैं, सेकण्ड नम्बर नॉलेज।

लेकिन पावरफुल ऐसा हो जो कोई भी बात सामने आये तो हिले नहीं, यह अभी कमी है। जो सर्विसएबुल निमित्त बनते हैं उन्हों में भी नॉलेज ज्यादा है, लॅव भी है लेकिन पावर कम है। पावरफुल स्टेज की निशानी क्या होगी? एक सेकेण्ड में कोई भी वायुमण्डल या वातावरण को, माया की कोई भी समस्या को खत्म कर देंगे। कभी हार नहीं खायेंगे। जो भी आत्मायें समस्या का रूप बन कर आती हैं वह उनके ऊपर बलिहार जायेंगी जिसको दूसरे शब्दों में प्रकृति दासी कहें। जब 5 तत्व दासी बन सकते हैं तो मनुष्य आत्मायें बलिहार नहीं जायेंगी? तो पावरफुल स्टेज का प्रैक्टिकल रूप यह है इसलिये कहा कि एक ही समय तीनों रूपों से सर्विस करने की जब रूपरेखा बन जायेगी तब हरेक कर्तव्य में सिद्धि दिखाई देगी। विधि का कारण सिद्धि हुआ ना। विधि में कमी होने कारण सिद्धि में कमी है। अब सिद्धि स्वरूप बनने के लिये इस विधि को पहले ठीक करो। भक्ति मार्ग में करते हैं साधना, यहाँ है साधन। साधन कौन सा? बापदादा की हर एक विशेषता को अपने में धारण करते-करते विशेष आत्मा बन जायेंगे। जैसे इम्तिहान के दिन जब नजदीक होते हैं तो जो कुछ स्टडी की हुई होती है थ्योरी वा प्रैक्टिकल, दोनों को रिवाइज कर और चेक करते हैं कि कौनसी सबजेक्ट में क्या-क्या कमी रही हुई है? इसी प्रकार अब जबकि समय नजदीक आ रहा है तो हर सबजेक्ट में अपने आपको देखो कि कौनसी कमी और कितनी परसेन्ट तक कमी रही हुई है? थ्योरी में भी और प्रैक्टिकल में, दोनों में चेक करना है। हरेक सबजेक्ट की कमी को देखते हुए अपने आपको कम्पलीट करते जाओ, लेकिन कम्पलीट तब होंगे जब पहले रिवाइज करने से अपनी कमी का मालूम पड़ेगा। सबजेक्ट को तो जानते हो। सबजेक्ट को बुद्धि में धारण किया है वा नहीं, उसकी परख क्या है? जैसे सिद्धि की परसेन्टेज बढ़ती जायेगी तो टाइम भी वेस्ट नहीं जायेगा। थोड़े टाइम में सफलता जास्ती मिलेगी, इसको कहा जाता है सिद्धि। अगर समय ज्यादा, मेहनत भी ज्यादा करते हो फिर सफलता मिलती है तो इसको भी परसेन्ट कम कहेंगे। सभी रीति से कम लगना चाहिए तन भी कम, मन के संकल्प भी कम लगें। नहीं तो संकल्प करते हो, प्लैन बनाते-बनाते मास डेढ़ लग जाता है। तो समय और संकल्प वा अपनी जो भी सर्वशक्तियां हैं उन सर्वशक्तियों के खजाने को ज्यादा काम में नहीं लगाना है। कम खर्च बालानशीन। संकल्प वही उत्पन्न होगा जिससे सिद्धि प्राप्त हो ही जायेगी। समय भी वही निश्चित होगा जिसमें सफलता हुई पड़ी है, इसको ही कहते हैं सिद्धि स्वरूप। तो सर्व सबजेक्ट्स में हम कहाँ तक पास हैं, इसकी परख क्या है? जो जितना सबजेक्ट में पास होगा, उतना ही उस सबजेक्ट के आधार पर ऑबजेक्ट और रिसपेक्ट मिलेगा। एक तो प्राप्ति का अनुभव होगा। जैसे ज्ञान की सबजेक्ट है तो उससे जो आबजेक्ट प्राप्त होती है - लाइट और माइट वह प्राप्ति का अनुभव करेंगे। उस नॉलेज की सबजेक्ट के आधार पर रेसपेक्ट भी इतना मिलेगा चाहे दैवी परिवार से, चाहे अन्य आत्माओं से। जैसे देखो आजकल के महात्माएं हैं, उन्हों को इतना रिसपेक्ट क्यों मिलता है? क्योंकि जो साधना की है, जो भी सबजेक्ट अध्ययन करते हैं उनकी ऑबजेक्ट रिसपेक्ट उन्हों को मिलती है, प्रकृति दासी होती है। तो यह एक ज्ञान की बात सुनाई। वैसे योग की भी सबजेक्ट है। उनसे क्या ऑबजेक्ट होनी चाहिए? योग अर्थात् याद की शक्ति द्वारा ऑबजेक्ट प्राप्त होनी चाहिए - वह जो भी संकल्प करेंगे वह समर्थ होगा और जो भी कोई समस्या आने वाली होगी, उनका पहले से ही योग की शक्ति से अनुभव होगा कि यह होने वाला है, तो पहले से ही मालूम होने कारण कभी भी हार नहीं खायेंगे। ऐसे ही योग की शक्ति द्वारा अपने पिछले संस्कारों का बीज खत्म होता है। कोई भी संस्कार अपने पुरुषार्थ में विघ्न नहीं बनेगा, जिसको नेचर कहते हो वह भी पुरूषार्थ में विघ्न रूप नहीं बनेगी। तो जिस सबजेक्ट की जो ऑबजेक्ट है, वह अनुभव होनी चाहिए। आबजेक्ट है तो इसका परिणाम रिसपेक्ट जरूर मिलेगी। आप मुख से जो भी शब्द रिपीट करेंगे वा जो भी प्लैन बनायेंगे वह समर्थ होने कारण सभी रिसपेक्ट देंगे अर्थात् जो भी एक दो को राय देते हैं उस राय को सभी रिसपेक्ट देंगे क्योंकि समर्थ है। इस प्रकार हर सबजेक्ट का देखो। दिव्य गुणों की वा सर्विस की सबजेक्ट है तो उसकी प्राप्ति यह है जो नजदीक सम्पर्क में और सम्बन्ध में आना चाहिए। नजदीक सम्पर्क-सम्बन्ध में आने से आटोमेटिकली रिसपेक्ट जरूर मिलेगा। ऐसे हर सबजेक्ट की ऑबजेक्ट को चेक करो और आबजेक्ट को चेक करने का साधन है रिसपेक्ट। अगर मैं

नॉलेजफुल हूँ तो जिसको भी नॉलेज देती हूँ वह उस नॉलेज को इतना रिसपेक्ट देते हैं? नॉलेज को रिसपेक्ट देना अर्थात् नॉलेजफुल को रेसपेक्ट देना है। अगर नॉलेज की सबजेक्ट में आबजेक्ट है तो और भी किसके संकल्प को परिवर्तन में लाकर समर्थ बना सकते हैं, तो जरूर रिसपेक्ट देंगे। तो इस रीति हर सबजेक्ट में चेकिंग करनी है। हर संकल्प में ऑबजेक्ट और रेसपेक्ट दोनों की प्राप्ति का अनुभव करते हैं तो परफेक्ट कहेंगे। परफेक्ट अर्थात् कोई भी इफेक्ट से दूर परफेक्ट। इफेक्ट से परे हैं तो परफेक्ट हैं। चाहे शरीर का, चाहे संकल्पों का, चाहे कोई भी सम्पर्क में आने से किसके भी वायब्रेशन या वायुमण्डल सभी प्रकार के इफेक्ट से परे हो जायेंगे। तो समझो सबजेक्ट में पास अर्थात् परफेक्ट हैं। ऐसे बन रहे हो ना? लक्ष्य तो यही है ना? अब अपनी चेकिंग ज्यादा होनी चाहिए। जैसे दूसरों को कहते हो कि समय के साथ स्वयं को भी परिवर्तन में लाओ वैसे ही सदैव अपने को भी यह स्मृति में रहे कि समय के साथ-साथ स्वयं को भी परिवर्तन में लाना है। अपने को परिवर्तन में लाते-लाते सृष्टि परिवर्तन हो जायेगी। अपने परिवर्तन के आधार से सृष्टि में परिवर्तन लाने का कार्य कर सकेंगे। यही श्रेष्ठता है जो दूसरे लोगों में नहीं है। वह सिर्फ दूसरों को परिवर्तन करने के यत्न में हैं। यहाँ स्वयं के आधार से सृष्टि को परिवर्तन करते हो। तो जो आधार है उसके लिये अपने ऊपर इतना अटेन्शन देना है-सदैव यह स्मृति रहे कि हमारे हर संकल्प के पीछे विश्व-कल्याण का संबंध है। जो आधारमूर्त हैं उनके संकल्पों में समर्थी नहीं तो समय के परिवर्तन में भी कमजोरी पड़ जाती है। इस कारण जितना-जितना स्वयं समर्थ बनेंगे उतना ही सृष्टि के परिवर्तन का समय समीप ला सकेंगे। ड्रामा अनुसार भल निश्चित है लेकिन वह भी किस आधार से बना है? आधार तो होगा ना। तो आधारमूर्त आप हो। अभी तो आप सभी की नजरों में हो। अच्छा।

वरदान:- गम की दुनिया सामने होते हुए भी बेगमपुर की बादशाही का अनुभव करने वाले अष्ट शक्ति स्वरूप भव

गम और बेगम की अभी ही नॉलेज है, गम की दुनिया सामने होते भी सदा बेगमपुर के बादशाही का अनुभव करना–यही अष्ट शक्ति स्वरूप, कर्मेन्द्रिय जीत बच्चों की निशानी है। अभी ही बाप द्वारा सर्वशक्तियों की प्राप्ति होती है लेकिन अगर कोई न कोई संगदोष वा कोई कर्मेन्द्रिय के वशीभूत हो अपनी शक्ति खो लेते हो तो जो बेगमपुर का नशा वा खुशी प्राप्त है वह स्वत: ही खो जाती है। बेगमपुर के बादशाह भी कंगाल बन जाते हैं।

स्लोगन:- दृढ़ता की शक्ति सदा साथ हो तो सफलता गले का हार है।